भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में समावेश

प्रो० डॉ० चंदन कुमार पंकज, प्राचार्य,
उदय मेमोरियल बी० एड० कॉलेज, रांची

"वाणी की वर्षा, अदाओं का फुहार,
इंटरनेट की किरणें, कुशलता की बौछार
चंदन की अनुभूति, श्रोताओं का प्यार
मुबारक हो आपको भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार"

शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है जो उसे अपनी पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने, एक समान और न्यायपूर्ण समाज विकसित करने और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने में सक्षम बनाती है। शिक्षा अध्यापन से छात्रों में आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान के दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए जिससे शिक्षा को और अधिक अनुभव आत्मक और मनोरंजन बनाया जा सके। विश्व भर में शिक्षा क्षेत्र में हाल ही में तेजी से हुई वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के कारण कार्यक्रम संरचना और परिणाम में परिवर्तन होते हुए देखा है। भारत में इसके जनसंख्या की लाभ प्राप्त करने और देश की प्रतिभा और संसाधनों को बढ़ाने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उपयुक्त दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है क्योंकि यह प्राचीन भारतीय ज्ञान, ज्ञान और शक्ति के दर्शन और विचार पर विकसित हुई है।

''भारतीय ज्ञान परंपरा की विश्व दृष्टि में मनुष्य को सृष्टि का स्वामी नहीं अपितु न्यायसी माना जाता है। मनुष्य भी चराचर में तमाम जीवित प्राणियों के बीच महज एक प्राणी ही है। इसलिए यह मानव – केंद्रित नहीं अपितु चराचर– केंद्रित विश्व दृष्टि है। इस विश्व दृष्टि में मनुष्य की अवधारणा 'प्रकृतिजयी' रूप में अवधारित न होकर 'आत्मजयी' रूप में सरकार हुई है।"

भारत उपासना ऋषियों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मस्थली, इतिहास की माता, पुराने की दादी, परंपराओं की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवान एवं सृजनशील सामग्री है इसका भंडारण अकेले भारत में है।

आज वैश्विक स्तर पर सर्वसम्मति से योग दिवस की स्वीकृति इसका प्रमाण है। वर्तमान में मनुष्य के स्वास्थ्य विशेष करके मानसिक तनाव एवं आवश्यकता का समाधान योग के द्वारा प्राप्त हो रहा है, परंतु भारत में तो सहर्ष वर्षों से योग्य की परंपरा है। अपितु वर्तमान समय में योग एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की है इसका श्रेय माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है।

एक प्रकार से भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिकता के साथ समन्वय करके देश और दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं चुनौतियों के समाधान कर सके इस प्रकार शिक्षा का स्वरूप बनाने का प्रयास शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश से संभव हो सकेगा।

****